1

संवेग
EMOTION

B.A - I - (H)
PAPER - I

संवेग और प्रेरणा में तुलना

यदि हम 'प्रेरणा' और 'संवेग' के स्वरूप पर विचार करेंगे तो मालूम होगा कि दोनों ही प्रक्रियाओं में बहुत अधिक समानताएँ है। प्रेरणा की ही तरह संवेग भी लक्ष्यप्राप्ति की ओर निर्देशित होता है। इसलिए, इन दोनों के बीच अंतर बताना मुश्किल होता है। उदाहरणस्वरूप, क्रोध के संवेग को लें, जब व्यक्ति क्रोध में रहता है तब उस समय उसका लक्ष्य क्रोध उत्पन्न करनेवाली वस्तु को खत्म करना होता है इसी तरह प्रेम की अवस्था में प्रेयसी का लक्ष्य अपने प्रेमी के निकट रहना होता है।

प्रेरणा और संवेग में दूसरी समानता यह है कि प्रेरणात्मक प्रतिक्रयों में संवेगों का महत्वपूर्ण हाथ रहता है। इसलिए, ऐसा माना गया है कि संवेगों के बिना जीवन वस्तुतः गतिविहीन हो जाएगा। संवेग और प्रेरणा दोनों शब्दों की उत्पत्ति लैटिन के शब्दों से हुई है जिसका अर्थ समान है "to move"। यही कारण है कि हम किसी व्यक्ति को क्रोध की अवस्था में क्रुद्ध और विषाद की अवस्था दुखी हो जाना। इस प्रकार, प्रेरणा की तरह संवेग भी व्यक्ति को कार्यशील बनाता है।

संवेग और प्रेरणा में उपर्युक्त समानताओं के बावजूद दोनों प्रक्रियाएं एक-दूसरे से भिन्न है। इनके बीच प्रधान

अंतर यह है कि संवेग की अवस्था में व्यक्ति संवेगात्मक परिस्थिति की अनुभूतियों के भावात्मक पहलुओं, अर्थात उनसे संबद्ध दुःखद या सुखद भावों पर ही जोर देता है तथा याद रखता है और लक्ष्य-निर्देशन का पक्ष उपेक्षित रह जाता है। जैसे :— जब हम अपने कमरे में पढ़ रहे होते हैं और अचानक हमारी दृष्टि एक जहरीले सर्प पर पड़ती है तो उस समय भय का संवेग उत्पन्न हो जाता है। इस अवस्था में सर्प के काटने से मृत्यु की संभावना की अनुभूति एवं संबद्ध दुःखद भाव ही अत्यधिक प्रभावी रहता है और भयावह स्थिति में अपने को बचाने का लक्ष्य उतना प्रभावी नहीं रहता। परंतु, प्रेरणा में स्थिति ठीक विपरीत रहती है। प्रेरणात्मक व्यवहार मुख्य रूप से लक्ष्य-निर्देशित रहता है और इससे संबद्ध सुख या दुःख के भाव अपेक्षाकृत उपेक्षित रहते हैं। उदाहरण स्वरूप — भूख से पीड़ित व्यक्ति जब भोजन की तलाश में होटल की ओर जाता है उस समय उसका मुख्य उद्देश्य होटल से भोजन प्राप्त करना होता है भोजन मिलेगा या नहीं — यह भाव प्रधान नहीं रहता।

संवेग और प्रेरणा में दूसरा महत्वपूर्ण अंतर यह है कि बाह्य उत्तेजना के उपस्थित होने तथा उक्त उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण करने पर संवेग होता है। इसका अर्थ यह है कि संवेग बाह्य उत्तेजना के प्रति की जानेवाली ज्ञानात्मक प्रतिक्रिया है

प्रारंभ होता है। परन्तु, प्रेरणा और स्वालूका के जैविक प्रणोदन प्राणी की आंतरिक अवस्थाओं की आवश्यकताओं से उत्पन्न होता है, जिनका संबंध तंतुओं की रसायनिक अवस्थाओं से रहता है। अतः जैविक प्रणोदन शारीरिक तंतुओं की आवश्यकताओं का द्योतक है, जिसकी पूर्ति स्वतः क्रम के अनुसार हो जाती है जैसे :- प्यास की अवस्था।

हालांकि संवेग और प्रेरणा में अनेक समानताएँ हैं, फिर भी ये दोनों प्रक्रियाएँ एक-दूसरे से भिन्न है।

Next day

Hrishi Kesh lal
Deptt - Psychology.
B.M.C. Rahika.